

रूप रिझिवार (१४४)

आज झूला बना सरकार का।
साईं सियाराम सुकुमार का॥

रितु पावस की प्रेम सुहाई बादलों ने है रिमि झिमि लाई
रंग बाढा है वर्षा की धार का॥

कदम्ब डाली पर झूला सजाया रेशम डोर पै पुष्प सजाया
झूटा देती हैं सखियां प्यार का॥

बनी परम रसीली है झांकी अदा बांकी है प्यारे पिया की
कैसा प्यारा दरस है श्रंगार का॥

कैसी यमुना पुलनि की बहार है
युगल झूलन की शोभा अपार है
छाया नैनों में रूप रिझिवार का॥

सखी मृदंग मजीरा बजावें अति मीठी मीठी तानें मिलावें
मिल गाती है राग मल्हार का॥

फुली लता द्रमनि चहूं और है
बने नवल निकुंज चित चोर है
मोर करते शब्द जै कार का॥

गरीबि श्री खण्डि की भई मन भाई है
मिली सांवण झूले की वाधाई है
होता कथन न हर्ष अपार का॥